

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पू. आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

३२

देविंदत्थओ-नवमं पड्णयं

मुनि दीपरत्नसागर

Date : / / 2012

Jain Agam Online Series-32

३२**गंथाणुक्कमो**

कमंको	विसय	सुत्तं	गाहा	अणुक्कमो	पिट्ठंको
१	मंगलं, देविंद-पुच्छा	-	१-११	१-११	२
२	भवणवई - अहिगार	-	११-६६	११-६६	२
३	वाणमंतरं - अहिगार	-	६७-८०	६७-८०	६
४	जोइसियाणं-अहिगार	-	८१-१६१	८१-१६१	६
५	वेमाणियाणं-अहिगार	-	१६२-२७३	१६२-२७३	११
६	इसिपब्भारापुढवि व सिद्धाधिगार	-	२७४-३०१	२७४-३०१	१८
७	जिन इड्ढि-उवसंहार	-	३०२-३०७	३०२-३०७	१९

३२

देविंदत्थओ – नवमं पइण्णयं

- [१] अमरनरवंदिए वंदिरुण उसभाइए जिनवरिंदे ।
वीरवर अपच्छिमंते तेलोक्कगुरु पणमिरुणं ॥
- [२] कोई पढमे पाउसंमि सावओ समयनिच्छयविहिण्णू ।
वण्णेइ थयमुयारं जियमाणे वद्धमाणम्मि ॥
- [३] तस्स थुणंतस्स जिनं सोइयकडा पिया सुहनिसन्ना ।
पंजलिउडा अभिमुही सुणइ थयं वद्धमाणस्स ॥
- [४] इंदविलयाहिं तिलयरयणंकिए लक्खणंकिए सिरसा ।
पाए अवगयमाणस्स वंदिमो वद्धमाणस्स ॥
- [५] विनयपणएहिं सिढिलमउडेहिं अपडिहया जस्स देवेहिं ।
पाया पसंतरोसस्स वंदिमो वद्धमाणस्स ॥
- [६] बतीसं देविंदा जस्स गुणेहिं उवहम्मिया छायां ।
तो तस्स वियच्छेयं पायच्छायं उवेहामो ॥
- [७] बतीसं देविंद ति भणियमितंमि सा पियं भणइ ।
अंतरभासं ताहे काहेमो कोउहल्लेणं ॥
- [८] कयरे ते बतीसं देविंदा को व कत्थ परिवसइ ।
केवइया कस्स ठिई को भवनपरिग्गहो तस्स ? ॥
- [९] केवइया व विमाना भवना नगरा व हुंति केवइया ।
पुढवीण व बाहल्लं उच्चत्तं विमान वण्णो वा ? ॥
- [१०] का रंति व का लेणा उक्कोसं मज्झिमं जहन्नं ।
उस्सासो निस्सासो ओही विसओ व को केसिं ? ॥
- [११] विनओवयार ओवहम्मियाइ हासवसमुव्वहंतीए ।
पडिपुच्छिए पियाए भणइ सुयणु ! तं निसामेह ॥
- [१२] सुयनाणसागराओ सुणिओ पडिपुच्छणाइं जं लद्धं ।
पुन वागरणा बलियं नामावलियाइं इंदाणं ॥
- [१३] सुण वागरणा बलियं रयणं व पणामियं च वीरेहिं ।
तारावलि व्व धवलं हियएण पसन्नचित्तेणं ॥
- [१४] रयणप्पभाइकुडनिकुडवासी सुतनू ! तेउलेसागा ।
वीसं विकसियनयना भवनवई ते निसामेह ॥
- [१५] दो भवनवई इंदा चमरे वइरोयणे य असुराणं ।
दो नागकुमारिंदा भूयानंदे य धरणे य ॥

- [१६] दो सुयणु ! सुवणिंदा वेणूदेवे य वेणुदाली य ।
दो दीवकुमारिंदा पुण्णे य तहा वसिट्ठे य ॥
- [१७] दो उदहिकुमारिंदा जलकंते जलपभे य नामेणं ।
अमियगइ अमियवाहन दिसाकुमाराण दो इंदा ॥
- [१८] दो वाउकुमारिंदा वेलंब पभंजणे य नामेण ।
दो थणियकुमारिंदा घोसे य तहा महाघोसे ॥
- [१९] दो विज्जुकुमारिंदा हरिकंत हरिस्सहे य नामेणं ।
अग्गिसिह अग्गिमानव हुयासणवई वि दो इंदा ॥
- [२०] एए विकसियनयने ! दस दिसि वियसियजसा मए कहिया ।
भवनवर-सुहनिसन्ने सुण भवन-परिग्गहमिमेसिं ॥
- [२१] चमर-वइरोअणाणं असुरिंदाणं महानुभागाणं ।
तेसिं भवनवराणं चउसट्ठिमहे सयसहस्सा ॥
- [२२] नागकुमारिंदाणं भूयानंद-धरणाण दोण्हंपि ।
तेसिं भवनवराणं चुलसीइमहे सयसहस्से ॥
- [२३] दो सुयणु ! सुवणिंदा वेणूदेवे य वेणुदाली य ।
तेसिं भवनवराणं बावत्तरिमो सयसहस्सा ॥
- [२४] वाउकुमारिंदाणं वेलंब-पभंजणाण दोण्हंपि ।
तेसिं भवनवराणं छन्नवइमहे सयसहस्सा ॥
- [२५] चउसट्ठी असुराणं चुलसीई चेव होइ नागाणं ।
बावत्तरि सुवण्णाणं वाउकुमाराण छन्नउई ॥
- [२६] दीव-दिसा-उदहीणं विज्जुकुमारिंद-थणिय-मग्गीणं ।
छण्हंपि जुयलयाणं बावत्तरिमो सयसहस्सा ॥
- [२७] एककेक्कम्मि य जुयले नियमा बावत्तरिं सयसहस्सा ।
सुंदरि ! लीलाए ठिए ठिईविसेसं निसामेहि ॥
- [२८] चमरस्स सागरोवम सुंदरि ! उक्कोसिया ठिई भणिया ।
साहीया बोद्धवा बलिस्स वयरोयणिंदस्स ॥
- [२९] जे दाहिणाण इंदा चमरं मुत्तूणं सेसया भणिया ।
पलिओवमं दिवड्ढं ठिई उ उक्कोसिया तेसिं ॥
- [३०] जे उत्तरेण इंदा बलिं पमोत्तूण सेसया भणिया ।
पलिओवमाइं दोण्णि उ देसूणाइं ठिई तेसिं ॥
- [३१] एसो वि ठिइविसेसो सुंदरूवे ! विसिट्ठरूवाणं ।
भोमिज्ज सुरवराणं सुण अनुभागो सुनयराणं ॥
- [३२] जोयणसहस्समेगं ओगाहित्तूण भवननगराइं ।
रयणप्पभाइ सत्त्वे एककारस जोयणसहस्से ॥

- [३३] अंतो चउरंसा खलु अहिय मनोहरसहावरमणिज्जा ।
बाहिरओऽविय वट्टा निम्मल वइरामया सव्वे ॥
- [३४] उक्किन्न्तरफलिहा अब्भितरओ उ भवनवासीणं ।
भवन-नगरा विरायंति कनग-सुसिलिट्ठ-पागारा ॥
- [३५] वरपउमकण्णिया मंडियाहिं हिट्ठा सहावलट्ठेहिं ।
सोहिंति पइट्ठाणेहिं विविह-मणि-भत्ति-चित्तेहिं ॥
- [३६] चंदनपइट्ठिएहिं य आसत्तोसत्त मल्लदामेहिं ।
दारेहिं पुरवरा ते पडागमालाउरा रम्मा ॥
- [३७] अट्ठेव जोयणाइं उच्चिद्धा हुंति ते दुवारवरा ।
धूमघडियाउलाइं कंचन-दामोवणद्धाणि ॥
- [३८] जहिं देवा भवनवई वरतरुणी-गीय-वाइयरवेणं ।
निच्चसुहिया पमुइया गयं पि कालं न याणंति ॥
- [३९] चमरे धरणे तह वेणुदेव पुण्णे य होइ जलकंते ।
अमियगई वेलंबे घोसे य हरी य अग्गिसिहे ॥
- [४०] कनग-मणि-रयणथूभिय-रम्माइं सवेइयाइं भवनाइं ।
एएसिं दाहिणओ सेसाणं उत्तरे पासे ॥
- [४१] चउतीसा चोयाला अट्ठतीसं च सयसहस्साइं ।
चत्ता पन्नासा खलु दाहिणओ हुंति भवनाइं ॥
- [४२] तीसा चत्तालीसा चउतीसं चेव सयसहस्साइं ।
छत्तीसा छायाला उत्तरओ हुंति भवनाइं ॥
- [४३] भवनविमानवईणं तायत्तीसा य लोगपाला य ।
सव्वेसिं तिन्नि परिसा समानचउगुणाऽऽयरक्खा उ ॥
- [४४] चउसट्ठी सट्ठी खलु छच्च सहस्सा तहेव चत्तारि ।
भवनवइ-वाणमंतर-जोइसियाणं च सामाणा ॥
- [४५] पंचऽग्गमहिसीओ चमर-बलीणं हवंति नायव्वा ।
सेसयभवणिंदाणं छच्चेव य अग्गमहिसीओ ॥
- [४६] दो चेव जंबुद्धीवे चत्तारि य मानुसुतरे सेले ।
छव्वारुणे समुद्धे अट्ठ य अरुणम्मि दीवम्मि ॥
- [४७] जं नामए समुद्धे दीवे वा जंमि हुंति आवासा ।
तन्नामए समुद्धे दीवे वा तेसिं उप्पाया ॥
- [४८] असुराणं नागाणं उदहिकुमाराणं हुंति आवासा ।
वरुणवरे दीवम्मि य तत्थेव य तेसिं उप्पाया ॥
- [४९] दीव-दिसा-अग्गीणं थणियकुमाराणं हुंति आवासा ।
अरुणवरे दीवम्मि य तत्थेव य तेसिं उप्पाया ॥

- [५०] वाठ-सुवण्णिंदाणं एएसिं मानुसुत्तरे सेले ।
हरिणो हरिप्पहस्स य विज्जुप्पभ मालवंतेसु ॥
- [५१] एएसिं देवाणं बल-वीरिय-परक्कमो उ जो जस्स ।
ते सुंदरि ! वण्णेऽहं अहक्कमं आनुपुत्वीए ॥
- [५२] जाव य जंबुद्धीवो जाव य चमरस्स चमरचंचा उ ।
असुरेहिं असुरकण्णाहिं तस्स विसओ भरेउं जे ॥
- [५३] तं चेव समइरेगं बलिस्स वइरोयणस्स बोद्धवं ।
असुरेहिं असुरकण्णाहिं तस्स विसओ भरेउं जे ॥
- [५४] धरणो वि नागराया जंबुद्धीवं फडाइ छाइज्जा ।
तं चेव समइरेगं भूयानंदे य बोद्धव्वं ॥
- [५५] गरुलोऽवि वेणुदेवो जंबुद्धीवं छएज्ज पक्खेणं ।
तं चेव समइरेगं वेणुदालिम्मि बोद्धव्वं ॥
- [५६] पुण्णो वि जंबुद्धीवं पाणितलेणं छएज्ज एक्केणं ।
तं चेव समइरेगं हवइ वसिट्ठे वि बोद्धवं ॥
- [५७] एक्काए जलुम्मीए जंबुद्धीव भरेज्ज जलकंतो ।
तं चेव समइरेगं जलप्पभे होइ बोद्धव्वं ॥
- [५८] अमियगइस्स वि विसओ जंबुद्धीवं तु पायपण्णीए ।
कंपेज्ज निरवसेसं इयरो पुन तं समइरेगं ॥
- [५९] एक्काए वायुगुंजाइ जंबुद्धीवं भरिज्ज वेलंबो ।
तं चेव समइरेगं पभंजणे होइ बोद्धव्वं ॥
- [६०] घोसोऽवि जंबुद्धीव सुंदरि ! एक्केण थणियसद्धेणं ।
बहिरीकरिज्ज सव्वं इयरो पुण तं समइरेगं ॥
- [६१] एक्काए विज्जुयाए जंबुद्धीवं हरी पकासिज्जा ।
तं चेव समइरेगं हरिस्सहे होइ बोद्धव्वं ॥
- [६२] एक्काए अग्गिजालाए जंबुद्धीवं डहेज्ज अग्गिसिहो ।
तं चेव समइरेगं माणवए होई बोद्धव्वं ॥
- [६३] तिरियं तु असंखेज्जा दीव-समुद्धा सएहिं सएहिं रुवेहिं ।
अवगाढा उ करिज्जा सुंदरि ! एएसिं एगयरो ॥
- [६४] पभू अन्नयरो इंदो जंबुद्धीवं तु वामहत्थेण !
छत्तं जहा धरेज्जा अन्नयओ मंदरं घित्तुं ॥
- [६५] जंबुद्धीवं कारुण छत्तयं मंदरं व से दंडं ।
पभू अन्नयरो इंदो एसो तेसिं बलविसेसो ॥
- [६६] एसा भवनवईणं भवनठिई वण्णिया समासेणं ।
सुण वाणमंतराणं भवनवई आनुपुत्वीए ॥

- [६७] पिसाय भूया जक्खा य रक्खसा किन्नरा य किंपुरिसा ।
महोरगा य गंधच्वा अट्ठविहा वाणमंतरिया ॥
- [६८] एण उ समासेणं कहिया भे वाणमंतरा देवा ।
पत्तेयं पि य वोच्छं सोलस इंदे महिड्डीए ॥
- [६९] काले य महाकाले सुरुवे पडिरुवे पुण्णभद्दे य ।
अमरवइ माणभद्दे भीमे य तहा महाभीमे ॥
- [७०] किन्नर किंपुरिसे खलु सप्पुरिसे खलु तहा महापुरिसे ।
अइकाय महाकाए गीयरई चेव गीयजसे ॥
- [७१] सन्निहिए सामाणे धाए विधाए इसी य इसिपाले ।
इस्सरे महिस्सरे या हवइ सुवच्छे विसाले य ॥
- [७२] हासे हासरई वि य सेए य तहा भवे महासेए ।
पयए पययावई वि य नेयच्वा आनुपुच्वीए ॥
- [७३] उड्ढमहे तिरियंमि य वसहिं ओविंति वंतरा देवा ।
भवना पुन ण्ह रयणप्पभाए उवरिल्लए कंडे ॥
- [७४] एक्केक्कम्मि य जुयले नियमा भवना वरा असंखेज्जा ।
संखिज्जवित्थडा पुन नवरं एतस्त्थ नाणत्तं ॥
- [७५] जंबुद्धीवसमा खलु उक्कोसेणं भवंति भवनवरा ।
खुद्धा खित्तसमाविय विदेहसमया य मज्झिमया ॥
- [७६] जहिं देवा वंतरिया वरतरुणीगीय-वाइयरवेणं ।
निच्चसुहिया पमुइया गयं वि कालं न याणंति ॥
- [७७] काले सुरुव पुण्णे भीमे तह किन्नरे य सप्पुरिसे ।
अइकाए गीयरई अट्ठेव य हुंति दाहिणओ ॥
- [७८] मणि-कनग-रयण-थूभिय-जंबूनय-वेइयाइं भवनाइं ।
एएसिं दाहिणओ सेसाणं उत्तरे पासे ॥
- [७९] दस वाससहस्साइं ठिई जहन्ना उ वंतरसुराणं ।
पलिओवमं तु एक्कं ठिई उ उक्कोसिया तेसिं ॥
- [८०] एसा वंतरियाणं भवनठिई वण्णिया समासेणं ।
सुण जोइसालयाणं आवासविहिं सुरवराणं ॥
- [८१] चंदा सूरा तारागणा य नक्खत्त गह-गण समत्ता ।
पंचविहा जोइसिया ठिई वियारी य ते गणिया ॥
- [८२] अद्धकविट्ठग-संठाण-संठिया फालियामया रम्मा ।
जोइसियाण विमाणा तिरियं लोए असंखिज्जा ॥
- [८३] धरणियलाउ समाओ सत्तहिं नउएहिं जोयणसएहिं ।
हेट्ठिल्लो होइ तलो सूरो पुण अट्ठहिं सएहिं

॥

- [८४] अट्ठसए आसीए चंदो तह चेव होइ उवरितले ।
एगं दसुत्तरसयं बाहल्लं जोइसस्स भवे ॥
- [८५] एगट्ठिभाग कारुण जोयणं तस्स भाग छप्पन्नं ।
चंदपरिमंडलं खलु अडयाला होइ सूरस्स ॥
- [८६] जहिं देवा जोइसिया वरतरुणीगीयं वाइयरवेणं ।
निच्चसुहिया पमुइया गयं पि कालं न याणंति ॥
- [८७] छप्पन्नं खलु भागा विच्छिन्नं चंदमंडलं होइ ।
अडवीसं च कलाओ बाहल्लं तस्स बोद्धव्वं ॥
- [८८] अडयालीसं भागा विच्छिन्नं सूरमंडलं होइ ।
चउवीसं च कलाओ बाहल्लं तस्स बोद्धव्वं ॥
- [८९] अद्धजोयणिया उ गहा तस्सद्धं चेव होइ नक्खत्ता ।
नक्खत्तद्धे तारा तस्सद्धं चेव बाहल्लं ॥
- [९०] जोयणमद्धं ततो गाऊयं पंचधनुसया हुंति ।
गह-नक्खत्तगणाणं तारविमाणाण विक्खंभो ॥
- [९१] जो जस्स विक्खंभो तस्सद्धं चेव होइ बाहल्लं ।
तं तिगुणं सविसेसं परीरओ होइ बोद्धव्वो ॥
- [९२] सोलस चेव सहस्सा अट्ठ य चउरो य दोन्नि य सहस्सा ।
जोइसिआण विमाणा वहंति देवाऽभिओगाओ ॥
- [९३] पुरओ वहंति सीहा दाहिणओ कुंजरा महाकाया ।
पच्चत्थिमेण वसहा तुरगा पुण उत्तरे पासे ॥
- [९४] चंदेहि उ सिग्घयरा सूरा सूरैहिं तह गहा सिग्घा ।
नक्खत्ता उ गहेहिं य नक्खत्तेहिं तु ताराओ ॥
- [९५] सव्वऽप्पगई चंदा तारा पुण हुंति सव्वसिग्घगई ।
एसो गईविसेसो जोइसियाणं तु देवाणं ॥
- [९६] अप्पिड्ढियाओ तारा नक्खत्ता खलु तओ महिड्ढियए ।
नक्खत्तेहिं तु गहा गहेहिं सूरा तओ चंदा ॥
- [९७] सव्वब्भिंतरऽभीई मूलो पुन सव्वबाहिरो भमइ ।
सव्वोवरिं च साई भरणी पुण सव्वहिट्ठिमया ॥
- [९८] साहा गह-नक्खत्ता मज्झेगा हुंति चंद-सूराणं ।
हिट्ठा समं च उप्पिं ताराओ चंद-सूराणं ॥
- [९९] पंचेव धनुसयाइं जहन्नयं अंतरं तु ताराणं ।
दो चेव गाउआइं निव्वाघाएण उक्कोसं ॥
- [१००] दोन्नि सए छावट्ठे जहन्नयं अंतरं तु ताराणं ।
बारस चेव सहस्सा दो बायाला य उक्कोसा ॥

- [१०१] एयस्स चंदजोगो सत्तट्ठिं खंडिओ अहोरत्ता ।
ते हुंति नव मुहुत्ता सत्तावीसं कलाओ अ ॥
- [१०२] सयभिसया भरणीओ अद्दा अस्सेस साइ जेट्ठा य ।
एए छन्नक्खत्ता पन्नरसमुहुत्त संजोगा ॥
- [१०३] तिन्नेव उत्तराइं पुनव्वसु रोहिणी विसाहा य ।
एए छन्नक्खत्ता पणयालमुहुत्तसंजोगा ॥
- [१०४] अवसेसा नक्खत्ता पन्नरसया हुंति तीसइ मुहुत्ता ।
चंदंमि एस जोगो नक्खत्ताणं मुणेयव्वो ॥
- [१०५] अभिई छच्च मुहुत्ते चत्तारि अ केवले अहोरत्ते ।
सूरेणं समं वच्चइ एत्तो सेसाण वुच्छामि ॥
- [१०६] सयभिसया भरणीओ अद्दा अस्सेस साइ जेट्ठा य ।
वच्चंति छऽहोरत्ते इक्कवीसं मुहुत्ते य ॥
- [१०७] तिन्नेव उत्तराइं पुनव्वसू रोहिणी य विसाहा ।
वच्चंति मुहुत्ते तिन्नि चेव वीसं चऽहोरत्ते ॥
- [१०८] अवसेसा नक्खत्ता पन्नरस वि सूरसहगया जंति ।
बारस चेव मुहुत्ते तेरस य समे अहोरत्ते ॥
- [१०९] दो चंदा दो सूरा नक्खत्ता खलु हवंति छप्पन्ना ।
छावत्तरं गहसयं जंबुद्धीवे वियारी णं ॥
- [११०] इक्कं च सयसहस्सं तितीसं खलु भवे सहस्साइं ।
नव य सया पन्नासा तारागण कोडिकोडिणं ॥
- [१११] चत्तारि चेव चंदा चत्तारि य सूरिया लवण तोए ।
बारं नक्खत्तसयं गहाण तिन्नेव बावन्ना ॥
- [११२] दो चेव सयसहस्सा सत्तट्ठिं खलु भवे सहस्साइं ।
नव य सया लवणजले तारागण कोडिकोडिणं ॥
- [११३] चउवीसं ससि-रविणो नक्खत्तसया य तिन्नि छत्तीसा ।
एक्कं च गहसहस्सं छप्पन्नं धायईसंडे ॥
- [११४] अट्ठेव सयसहस्सा तिन्नि सहस्सा य सत्त य सया उ ।
धायइसंडे दीवे तारागण कोडिकोडिणं ॥
- [११५] बायालीसं चंदा बायालीसं च दिनयरा दिता ।
कालोदहिंमि एए चरंति संबद्धलेसागा ॥
- [११६] नक्खत्तमिगसहस्सं एगमेव छावत्तरिं च सयमन्नं ।
छच्च सया छन्नउआ महग्गहा तिन्नि य सहस्सा ॥
- [११७] अट्ठावीसं कालोदहिंमि बारस य सयसहस्साइं ।
नव य सया पन्नासा तारागण कोडिकोडिणं ॥

॥

- [११८] चोयालं चंदसयं चोयालं चेव सूरियाण सयं ।
पुक्खरवरम्मि एए चरंति संबद्धलेसाया ॥
- [११९] चत्तारिं च सहस्सा बत्तीसं चेव हुंति नक्खत्ता ।
छच्च सया बावत्तर महग्गहा बारस सहस्सा ॥
- [१२०] छन्नउइ सयसहस्सा चोयालीसं भवे सहस्साइं ।
चत्तारी य सयाइं तारागण कोडिकोडिणं ॥
- [१२१] बावत्तरिं च चंदा बावत्तरिमेव दिनयरा दिता ।
पुक्खरवरदीवड्ढे चरंति एए पयासिंता ॥
- [१२२] तिन्नि सया छत्तीसा छच्च सहस्सा महग्गहाणं तु ।
नक्खत्ताणं तु भवे सोलाणि दुवे सहस्साणि ॥
- [१२३] अडयालीसं लक्खा बावीसं खलु भवे सहस्साइं ।
दो य सय सुक्खरद्धे तारागण कोडिकोडिणं ॥
- [१२४] बत्तीसं चंदसयं बत्तीसं चेव सूरियाण सयं ।
सयलं मनुस्सलयं चरंति एए पयासिंता ॥
- [१२५] एक्कारस य सहस्सा छप्पि य सोला महग्गहसया उ ।
छच्च सया छन्नउया नक्खत्ता तिन्नि य सहस्सा ॥
- [१२६] अट्ठासीई चत्ताइं सयसहस्साइं मनुयलोगम्मि ।
सत्त य सयामणूणा तारागण कोडिकोडीणं ॥
- [१२७] एसो तारापिंडो सत्त्वसमासेण मनुयलोगम्मि ।
बहिया पुण ताराओ जिणेहिं भणिया असंखिज्जा ॥
- [१२८] एवइयं तारग्गं जं भणियं मनुयलोगमज्झम्मि ।
चारं कलंबुया-पुप्फसंठियं जोइसं चरइ ॥
- [१२९] रवि-ससि-गह-नक्खत्ता एवइया आहिया मनुयलोए ।
जेसिं नामा-गोयं न पागया पन्नवेइंति ॥
- [१३०] छावट्ठिं पिंडयाइं चंदासइच्चाण मनुयलोगम्मि ।
दो चंदा दो सूरा हुंति इक्किक्कए पिडए ॥
- [१३१] छावट्ठिं पिडयाइं नक्खत्ताणं तु मनुयलोगम्मि ।
छप्पन्नं नक्खत्ता होंति एक्केक्कए पिडए ॥
- [१३२] छावट्ठी पिडयाइं महग्गहाणं तु मनुयलोगम्मि ।
छावत्तरं गहसयं च होइ एक्केक्कए पिडए ॥
- [१३३] चत्तारि य पंतीओ चंदासइच्चाण मनुयलोगम्मि ।
छावट्ठिं छावट्ठिं होइ इक्किक्कया पंती ॥
- [१३४] छप्पन्नं पंतीओ नक्खत्ताणं तु मनुयलोगम्मि ।
छावट्ठिं छावट्ठिं होइ इक्किक्कया पंती ॥

- [१३५] छावत्तरं गहाणं पंतिसयं होई मनुयलोगम्मि ।
छावट्ठिं छावट्ठिं होइ इक्किककया पंती ॥
- [१३६] ते मेरुमनुचरंति पयाहिणावत्तमंडला सव्वे ।
अणवट्ठिंएहिं जोएहिं चंदा सूरा गहगणा य ॥
- [१३७] नक्खत्त-तारयाणं अवट्ठिया मंडला मुणेयव्वा ।
ते वि य पयाहिणावत्तमेव मेरुं अनुचरंति ॥
- [१३८] रयणियर-दिनयराणं उड्ढमहे एव संकमो नत्थि ।
मंडलसंकमणं पुन अब्भित्तर-बाहिरं तिरियं ॥
- [१३९] रयणियर-दिनयराणं नक्खत्ताणं च महग्गहाणं च ।
चारविसेसेण भवे सुहदुक्खविही मनुस्साणं ॥
- [१४०] तेसिं पविसंताणं तावक्खत्तं उ वड्ढए नियमा ।
तेणेव कमेण पुणो परिहायइ निक्खमित्ताणं ॥
- [१४१] तेसिं कलंबुयापुप्फसंठिया हुंति तावक्खत्तमुहा ।
अंतो य संकुला बाहिं च वित्थडा चंदसूराणं ॥
- [१४२] केणं वड्ढइ चंदो ? परिहाणी केण होइ चंदस्स ? ।
कालो वा जुण्हा वा केणऽनुभावेण चंदस्स ? ॥
- [१४३] किण्हं राहुविमाणं निच्चं चंदेण होइ अविरहियं ।
चउरंगुलमप्पत्तं हिट्ठा चंदस्स तं चरइ ॥
- [१४४] छावट्ठिं छावट्ठिं दिवसे दिवसे उ सुक्कपक्खस्स ।
जं परिवड्ढइ चंदो खवेइ तं चेव कालेणं ॥
- [१४५] पन्नरसइभागेण य चंदं पन्नरसमेव संकमइ ।
पन्नरसइभागेण य पुणो वि तं चेव पक्कमइ ॥
- [१४६] एवं वड्ढइ चंदो परिहाणी एव होइ चंदस्स ।
कालो वा जुण्हा वा तेणऽनुभावेण चंदस्स ॥
- [१४७] अंतो मनुस्सखेत्ते हवंति चारोवगा य उववन्ना ।
पंचविहा जोइसिया चंदा सूरा गहगणा य ॥
- [१४८] तेण परं जे सेसा चंदाऽऽइच्च-गह-तार-नक्खत्ता ।
नत्थि गई न वि चारो अवट्ठिया ते मुणेयव्वा ॥
- [१४९] दो चंदा इह दीवे चत्तारि य सागरे लवणतोए ।
धायइसंडे दीवे बारस चंदा य सूरा य ॥
- [१५०] एगे जंबुद्धीवे दुगुणा लवणे चउग्गुणा हुंति ।
कालोयए तिगुणिया ससि-सूरा धायइसंडे ॥
- [१५१] धायइसंडप्पभिई उद्धिट्ठा तिगुणिया भवे चंदा ।
आइल्लचंदसहिया अनंतरानंतरे खित्ते ॥

- [१५२] रिक्ख-ग्गह-तारग्गा दीवसमुद्दाण इच्छसे नाठं ।
तस्स ससीहि उ गुणियं रिक्खग्गह-तारयग्गं तु ॥
- [१५३] बहिया उ मानुसनगस्स चंदसूराणऽवट्ठिया जोगा ।
चंदा अभीइजुत्ता सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥
- [१५४] चंदाओ सूरस्स य सूरा ससिणो य अंतरं होइ ।
पण्णास सहस्साइं जोयणाणं अनूणाइं ॥
- [१५५] सूरस्स य सूरस्स य ससिणो ससिणो य अंतरं होइ ।
बहिया उ मानुसनगस्स जोयणाणं सयसहस्सं ॥
- [१५६] सूरंतरिया चंदा चंदंतरिया उ दिनयरा दित्ता ।
चित्तंतरलेसागा सुहलेसा मंदलेसा य ॥
- [१५७] अट्ठासीइं च गहा अट्ठावीसं च होंति नक्खत्ता ।
एगससीपरिवारो एत्तो ताराण वुच्छामि ॥
- [१५८] छावट्ठि सहस्साइं नव चेव सयाइं पंचसयराइं ।
एगससी-परिवारो तारागण कोडिकोडीणं ॥
- [१५९] वाससहस्सं पलिओवमं च सूराण सा ठिई भणिया ।
पलिओवम चंदाणं वास-सयसहस्स-मब्भहियं ॥
- [१६०] पलिओवमं गहाणं नक्खत्ताणं च जाण पलियद्धं ।
पलियचउत्थो भाओ ताराण वि सा ठिई भणिया ॥
- [१६१] पलिओवमऽट्ठभागो ठिई जहन्ना उ जोइसगणस्स ।
पलिओवममुक्कोसं वाससयसहस्समब्भहियं ॥
- [१६२] भवनवइ-वाणवंतर-जोइसवासी ठिई मए कहिया ।
कप्पवई वि य वुच्छं बारस इंदे महिइढीए ॥
- [१६३] पढमो सोहम्मवई ईसाणवई उ भण्णए बीओ ।
ततो सणंकुमारो हवइ चउत्थो उ माहिंदो ॥
- [१६४] पंचमओ पुण बंभो छट्ठो पुण लंतओऽत्थ देविंदो ।
सत्तमओ महसुक्को अट्ठमओ भवे सहस्सारो ॥
- [१६५] नवमो य आणइंदो दसमो पुण पाणओऽत्थ देविंदो ।
आरण एककारसमो बारसमो अच्चुए इंदो ॥
- [१६६] एए बारस इंदा कप्पवई कप्पसामिया भणिया ।
आणाईसरियं वा तेणं परं नत्थि देवाणं ॥
- [१६७] तेण परं देवगणा सय-इच्छिय-भावणाइ उववन्ना ।
गेविज्जेहिं न सक्को उववाओ अन्नलिंगेणं ॥
- [१६८] जे दंसणवावन्ना लिंगगहण करंति सामण्णे ।
तेसिं पि य उववाओ उक्कोसो जाव गेवेज्जा ॥

- [१६९] इत्थ किर विमाणाणं बतीसं वण्णिया सयसहस्सा ।
सोहम्म-कप्पवइणो सक्कस्स महानुभागस्स ॥
- [१७०] ईसाण-कप्पवइणो अट्ठावीसं भवे सयसहस्सा ।
बारस्स सयसहस्सा कप्पम्मि सणंकुमारम्मि ॥
- [१७१] अट्ठेव सयसहस्सा माहिदंमि उ भवंति कप्पम्मि ।
चत्तारि सयसहस्सा कप्पम्मि उ बंभलोगम्मि ॥
- [१७२] इत्थ किर विमाणाणं पन्नासं लंतए सहस्साइं ।
चत्तारि महासुक्के छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥
- [१७३] आनय-पानयकप्पे चत्तारि सयास्सरणस्सच्युए तिन्नि ।
सत्त विमाणसयाइं चउसु वि एएसु कप्पेसु ॥
- [१७४] एयाइं विमाणाइं कहियाइं जाइं जत्थ कप्पम्मि ।
कप्पवइण वि सुंदरि ! ठिई विसेसे निसामेहि ॥
- [१७५] दो सागरोवमाइं सक्कस्स ठिई महानुभागस्स ।
साहीया ईसाने सत्तेव सणंकुमारम्मि ॥
- [१७६] माहिंदे साहियाइं सत्त दस चेव बंभलोगम्मि ।
चउदस लंतइ कप्पे सत्तरस भवे महासुक्के ॥
- [१७७] कप्पम्मि सहस्सारे अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई ।
एगुणवीसास्सनयकप्पे वीसा पुण पाणए कप्पे ॥
- [१७८] पुण्णा य इक्कवीसा उदहिसनामाण आरणे कप्पे ।
अह अच्चुयम्मि कप्पे बावीसं सागराण ठिई ॥
- [१७९] एसा कप्पवइणं कप्पठिई वण्णिया समासेणं ।
गेवेज्जस्सनुत्तराणं सुणस्सनुभागं विमाणाणं ॥
- [१८०] तिन्नेव य गेविज्जा हिट्ठिल्ला मज्झिमा य उवरिल्ला ।
इक्किक्कंपि य तिविहं नव एवं हुंति गेवेज्जा ॥
- [१८१] सुदंसणा अमोहा य, सुप्पबुद्धा जसोधरा ।
वच्छा सुवच्छा सुमना, सोमनसा पियदंसणा ॥
- [१८२] एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमए सत्तुत्तरं च मज्झिमए ।
सयमेगं उवरिमए पंचेव अनुत्तरविमाणा ॥
- [१८३] हेट्ठिमगेविज्जाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई ।
इक्किक्कमारुहिज्जा अट्ठहिं सेसेहिं नमियंगी ! ॥
- [१८४] विजयं च वेजयंतं जयंतमपराजियं च बोद्धव्वं ।
सव्वट्ठसिद्धनामं होइ चउण्हं तु मज्झिमयं ॥
- [१८५] पुव्वेण होइ विजयं दाहिणओ होइ वेजयंतं तु ।
अवरेणं तु जयंतं अवराइयमुत्तरे पासे ॥

- [१८६] एणसु विमानेसु उ तितीसं सागरोवमाइं ठिई ।
सव्वट्ठसिद्धनामे अजहन्नुक्कोस तेतीसा ॥
- [१८७] हेट्ठिला उवरिल्ला दो दो जुयलऽद्धचंदसंठाणा ।
पडिपुण्ण-चंदसंठाण-संठिया मज्झिमा चउरो ॥
- [१८८] गेविज्जाऽऽवलिसरिसा गेविज्जा तिन्नि तिन्नि आसन्ना ।
हुल्लुयसंठाणाइं अनुत्तराइं विमाणाइं ॥
- [१८९] घनउदहि-पइट्ठाणा सुरभवना दोसु हुंति कप्पेसु ।
तिसु वाउपइट्ठाणा तदुभय-सुपइट्ठिया तिन्नि ।
- [१९०] तेण परं उवरिमया आगासंतर-पइट्ठिया सव्वे ।
एस पइट्ठाण-विही उइढं लोए विमाणाणं ॥
- [१९१] किण्हा नीला काऊ तेऊलेसा य भवन-वंतरिया ।
जोइस-सोहम्मिसाण तेउलेसा मुणेयव्वा ॥
- [१९२] कप्पे सणंकुमारे माहिंदे चेव बंभलोए य ।
एणसु पम्हलेसा तेण परं सुक्कलेसा उ ॥
- [१९३] कनगततरताभा सुरवसभा दोसु हुंति कप्पेसु ।
तिसु हुंति पम्हगोरा तेण परं सुक्किला देवा ॥
- [१९४] भवनवइ वाणमंतर जोइसिया हुंति सत्तरयणीया ।
कप्पवईणऽवि सुंदरि ! सुण उच्चतं सुरवराणं ॥
- [१९५] सोहम्मिसानसुरा उच्चत्ते हुंति सत्तरयणीया ।
दो दो कप्पा तुल्ला दोसु वि परिहायए रयणी ॥
- [१९६] गेविज्जेसु य देवा रयणीओ दुन्नि हुंति उच्चाओ ।
रयणी पुण उच्चतं अनुत्तर विमान - वासीणं ॥
- [१९७] कप्पाओ कप्पम्मि उ जस्स ठिई सागरोवमब्भहिया ।
उस्सेहो तस्स भवे इक्कारसभाग परिहीनो ॥
- [१९८] जो अ विमाणुस्सेहो पुढवीणं जं च होइ बाहल्लं ।
दोण्हं पि तं पमाणं बत्तीसं जोयणसयाइं ॥
- [१९९] भवनवइ-वाणमंतर-जोइसिया हुंति काय-पवियारा ।
कप्पवईणवि सुंदरि ! वुच्छं पवियारण-विही उ ॥
- [२००] सोहम्मिसाणेसु सुरवरा हुंति कायपवियारा ।
सणंकुमार-माहिंदेसुं फास-पवियारया देवा ॥
- [२०१] बंभे लंतय-कप्पे सुरवरा हुंति रुव-पवियारा ।
महसुक्कसहस्सारे सद्धपवियारया देवा ॥
- [२०२] आनयपानयकप्पे आरण तह अच्चुएसु कप्पम्मि ।
देवा मनपवियारा तेण परं चूअ-पवियारा ॥

- [२०३] गोसीसाऽगरु-केयडपत्ता पुन्नाग-बडलगंधा य ।
चंपय-कुवलयगंधा तगरेल-सुगंधगंधा य ॥
- [२०४] एसा णं गंधविही उवमाए वण्णिया समासेणं ।
दिट्ठीए वि य तिविहा थिर सुकुमारा य फासेणं ॥
- [२०५] तेवीसं च विमाणा चउरासीइं च सयसहस्साइं ।
सत्ताणउइ सहस्सा उइं लोए विमाणाणं ॥
- [२०६] अउणानउई सहस्सा चउरासीइं च सयसहस्साइं ।
एगूणयं दिवइं सयं च पुप्फावकिण्णाणं ॥
- [२०७] सत्तेव सहस्साइं सयाइं बावत्तराइं अट्ठ भवे ।
आवलियाइ विमाणा सेसा पुप्फावकिण्णा णं ॥
- [२०८] आवलिआइ विमाणाण अंतरं नियमसो असंखिज्जं ।
संखिज्जमसंखिज्जं भणियं पुप्फावकिण्णाणं ॥
- [२०९] आवलियाइ विमाणा वट्टा तंसा तहेव चउरंसा ।
पुप्फावकिण्णया पुन अनेगविह रुवसंठाणा ॥
- [२१०] वट्टं खु वलयगं पिव तंसा सिंघाडयं पिव विमाणा ।
चउरंसविमाणा पुन अक्खाडयसंठिया भणिया ॥
- [२११] पढमं वट्टविमाणं बीयं तंसं तहेव चउरंसं ।
एगंतर चउरंसं पुणो वि वट्टं पुणो तंसं ॥
- [२१२] वट्टं वट्टस्सुवरिं तंसं तंसस्स उप्परिं होइ ।
चउरंसे चउरंसं उइं तु विमानसेढीओ ॥
- [२१३] उवलंबयरज्जूओ सव्वविमाणाण हुंति समियाओ ।
उवरिम चरिमंताओ हिट्ठिलो जाव चरिमंतो ॥
- [२१४] पागारपरिक्खिता वट्टविमाणा हवंति सव्वे वि ।
चउरंस विमाणाणं चउद्धिसिं वेइया भणिया ॥
- [२१५] जत्तो वट्टविमाणं तत्तो तंसस्स वेइया होइ ।
पागारो बोद्धवो अवसेसाणं तु पासाणं ॥
- [२१६] जे पुन वट्टविमाणा एगदुवारा हवंति सव्वे वि ।
तिन्नि य तंसविमाणे चत्तारि य हुंति चउरंसे ॥
- [२१७] सत्तेव य कोडीओ हवंति बाबत्तरिं सयसहस्सा ।
एसो भवन समासो भोमिज्जाणं सुरवराणं ॥
- [२१८] तिरिओववाइयाणं रम्मा भोम्मनगरा असंखिज्जा ।
तत्तो संखिज्जगुणा जोइसियाणं विमाणा उ ॥
- [२१९] थोवा विमानवासी भोमिज्जा वाणमंतरमसंखा ।
तत्तो संखिज्जगुणा जोइसवासी भवे देवा ॥

- [२२०] पतेय विमाणाणं देवीणं छब्भवे सयसहस्सा ।
सोहम्मं कप्पम्मि उ ईसाणे हुंति चत्तारि ॥
- [२२१] पंचेवऽनुत्तराइं अनुत्तरगईहिं जाइं दिट्ठाइं ।
जत्थ अनुत्तरदेवा भोगसुहं अनुवमं पत्ता ॥
- [२२२] जत्थ अनुत्तर गंधा तहेव रुवा अनुत्तरा सद्दा ।
अच्चित्तपुग्गलाणं रसो अ फासो अ गंधो अ ॥
- [२२३] पप्फोडिय कलिकलुसा पप्फोडिय कमलरेणुसंकासा ।
वरकुसुम महुकरा इव सुहुमयरं नंदिघोट्टंति ॥
- [२२४] वरपठम गब्भगोरा सव्वे ते एगगब्भ वसहीआ ।
गब्भवसही विमुक्का सुंदरि ! सुक्खं अनुहवंति ॥
- [२२५] तेत्तीसाए सुंदरि ! वाससहस्सेहिं होइ पुन्नेहिं ।
आहाराऽवहि देवाणऽनुत्तरविमानवासीणं ॥
- [२२६] सोलसहि सहस्सेहिं पंचेहिं सएहिं होइ पुन्नेहिं ।
आहारो देवाणं मज्झिममाठं धरिंताणं ॥
- [२२७] दस वाससहस्साइं जहन्नमाठं धरंति जे देवा ।
तेसिंपि य आहारो चउत्थभतेण बोद्धव्वो ॥
- [२२८] संवच्छरस्स सुंदरि ! मासाणं अद्धपंचमाणं च ।
उस्सासो देवाणं अनुत्तरविमानवासीणं ॥
- [२२९] अद्धट्ठमेहिं राइंदिएहिं अट्ठहि य सुतनु ! मासेहिं ।
उस्सासो देवाणं मज्झिममाठं धरिंताणं ॥
- [२३०] सत्तपहं थोवाणं पुन्नाणं पुन्नइंदुसरिसमुहे !
ऊसासो देवाणं जहन्नमाठं धरिंताणं ॥
- [२३१] जइ सागरोवमाइं जस्स ठिई तस्स तत्तिएहिं पक्खेहिं ।
ऊसासो देवाणं वाससहस्सेहिं आहारो ॥
- [२३२] आहारो ऊसासो एसो मे वण्णिओ समासेणं ।
सुहुमंतरा य नाहि ! सुंदरि ! अचिरेण कालेण ॥
- [२३३] एएसिं देवाणं ओही उ विसेसओ उ जो जस्स ।
तं सुंदरि ! वण्णेऽहं अहक्कमं आनुपुव्वीए ॥
- [२३४] सोहम्ममीसाण पढमं दुच्चं च सणंकुमार-माहिंदा ॥
तच्चं च बंभ-लंतग सुक्क-सहस्सारय चउत्थिं ॥
- [२३५] आनयपानयकप्पे देवा पासंति पंचमिं पुढविं ।
तं चेव आरण-ऽच्चुय ओहियनाणेण पासंति ॥
- [२३६] छट्ठिं हिट्ठिम मज्झिम गेविज्जा सत्तमिं च उवरिल्ला ।
संभिन्न लोगनालिं पासंति अनुत्तरा देवा ॥

- [२३७] संखिज्ज जोयणा खलु देवाणं अद्धसागरे ऊणे ।
तेण परम संखिज्जा जहन्नयं पन्नवीसं तु ॥
- [२३८] तेण परम संखिज्जा तिरियं दीवा य सागरा चेव ।
बहुययरं उवरिमया उड्ढं तु सकप्प थूभाइं ॥
- [२३९] नेरइय-देव-तित्थंकरा य ओहिस्ससबाहिरा हुंति ।
पासंति सच्चओ खलु सेसा देसेण पासंति ॥
- [२४०] ओहिन्नाणे विसओ एसो मे वण्णिओ समासेणं ।
बाहल्लं उच्चतं विमाणवण्णं पुणो वुच्छं ॥
- [२४१] सत्तावीसं जोयणसयाइं पुढवीणं होइ बाहल्लं ।
सोहम्मीसाणेसु रयणविचिता य सा पुढवी ॥
- [२४२] तत्थ विमाणा बहुविहा पासाय पगइ वेइयारम्मा ।
वेरुलिय थूभियागा रयणामय दामलंकारा ॥
- [२४३] केइत्थससियविमाणा अंजनधाउसरिसा सभावेणं ।
अद्वयरिट्ठसवण्णा जत्थास्सवासा सुरगणाणं ॥
- [२४४] केइ य हरियविमाणा मेयगधाऊसरिसा सभावेणं ।
मोरग्गीवसवण्णा जत्थास्सवासा सुरगणाणं ॥
- [२४५] दीवसिहसरिसवण्णित्थ केइ जासुमण-सूरसरिवण्णा ।
हिंगुलुय-धाउवण्णा जत्थास्सवासा सुरगणाणं ॥
- [२४६] कोरिंटाउवण्णित्थ केइ फुल्लकणियारसरिसवण्णा य ।
हालिद्धभयवण्णा जत्थावासा सुरगणाणं ॥
- [२४७] अविठ्तमल्लदामा निम्मलगाया सुगंधनीसासा ।
सच्चे अवट्ठियवया सयंपभा अनिमिसच्छा य ।
- [२४८] बावत्तरिकलापंडिया उ देवा हवंति सच्चेसवि ।
भवसंकमणे तेसिं पडिवाओ होइ नायव्वो ॥
- [२४९] कल्लाणफलविवागा सच्छंदविउच्चियाभरणधारी ।
आभरणवसनरहिया हवंति साभाविय सरीरा ॥
- [२५०] वत्तुलसरिसवरूवा देवा इक्कम्मि ठिईविसेसम्मि ।
पच्चग्गसहीनमहिमा ओगाहण वण्णपरिमाणा ॥
- [२५१] किण्हा नीला लोहिय हालिद्धा सुक्किला विरायंति ।
पंचसए उच्चिद्धा पासाया तेसु कप्पेसु ॥
- [२५२] तत्थास्ससना बहुविहा सयणिज्जा मणिभत्तिसयविचिता ।
विरइय वित्थडभूसा रयणामय दामलंकारा ॥
- [२५३] छव्वीस जोयणसयाइं पुढवीणं ताण होइ बाहल्लं ।
सणंकुमार-महिंदे रयणविचिता य सा पुढवी ॥

- [२५४] तत्थ य नीला लोहिय हालिद्धा सुक्किला विरायंति ।
छच्च सए उव्विद्धा पासाया तेसु कप्पेसु ॥
- [२५५] तत्थाऽऽसना बहुविहा सयणिज्जा य मणिभत्तिसयचित्ता ।
विरइय वित्थडदूसा रयणामय दामऽलंकारा ॥
- [२५६] पण्णवीसं जोयणसयाइं पुढवीण होइ बाहल्लं ।
बंभय-लंतयकप्पे रयणविचित्ता य सा पुढवी ॥
- [२५७] तत्थ विमाणा बहुविहा पासाया य मणिवेइयारम्मा ।
वेरुलिय थूभियागा रयणामय दामऽलंकारा ॥ ॥
- [२५८] लोहिय हालिद्धा पुण सुक्किलवण्णा य ते विरायंति ।
सत्तसए उव्विद्धा पासाया तेसु कप्पेसु ॥
- [२५९] चउवीसं जोयणसयाइं पुढवीण होइ बाहल्लं ।
सुक्के य सहस्सारे रयणविचित्ता य सा पुढवी ॥
- [२६०] तत्थ विमाणा बहुविहा पासाया य मणिवेइयारम्मा ॥
वेरुलिय थूभियागा रयणामय दामऽलंकारा ॥
- [२६१] हालिद्धभेयवण्णा सुक्किलवण्णा य ते विरायंति ।
अट्ठ य ते उव्विद्धा पासाया तेसु कप्पेसु ॥
- [२६२] तत्थाऽऽसना बहुविहा पासाया य मणिवेइयारम्मा ॥
वेरुलिय थूभियागा रयणामय दामऽलंकारा ॥
- [२६३] तेवीसं जोयणसयाइं पुढवीणं तासि होइ बाहल्लं ।
आनयपानयआरणच्चुए - रयणविचित्ता उ सा पुढवी ॥
- [२६४] तत्थ विमाणा बहुविहा पासाया य मणिवेइयारम्मा ।
वेरुलियथूभियागा रयणामय दामऽलंकारा ॥
- [२६५] संखंकसन्निकासा सव्वे दगरय तुसारसरिवण्णा ।
नव य सए उव्विद्धा पासाया तेसु कप्पेसु ॥
- [२६६] बावीसं जोयणसयाइं पुढवीण तासिं होइ बाहल्लं ।
गेविज्ज विमाणेसुं रयणविचित्ता उ सा पुढवी ॥
- [२६७] तत्थ विमाणा बहुविहा पासाया य मणिवेइया रम्मा ।
वेरुलिय थूभियागा रयणामय दामऽलंकारा ॥
- [२६८] संखंकसन्निकासा सव्वे दगरय-तुसारसरिवण्णा ।
दस य सए उव्विद्धा पासाया ते विरायंति ॥
- [२६९] एगवीस जोयणसयाइं पुढवीणं तासि होइ बाहल्लं ।
पंचसु अनुत्तरेसुं रयणविचित्ता य सा पुढवी ॥
- [२७०] तत्थ विमाणा बहुविहा पासाया य मणिवेइयारम्मा ।
वेरुलिय थूभियागा रयणामय दामऽलंकारा ॥

- [२७१] संखंकसन्निकासा सव्ये दगरय तुसारसरिवण्णा ।
इक्कारस उव्विद्धा पासाया ते विरायंति ॥
- [२७२] तत्थाससना बहुविहा सयणिज्जा मणिभत्तिसयविचिता ।
विरइयवित्थडदूसा य रयणामय दामसलंकारा ॥
- [२७३] सव्वट्ठविमाणस्स उ सव्वुवरिल्लाउ थूभियंताओ ।
बारसहिं जोयणेहिं इसिपब्भारा तओ पुढवी ॥
- [२७४] निम्मल दगरयवण्णा तुसार-गोखीर-फेणसरिवण्णा ।
भणिया उ जिनवरेहिं उताणय-छत्त-संठाणा ॥
- [२७५] पणयालीसं आयाम-वित्थडा होइ सयसहस्साइं ।
तं तिठणं सविसेसं परीरओ होइ बोद्धव्वो ॥
- [२७६] एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं ।
तीसं चेव सहस्सा दो य सया अउणपन्नासा ॥
- [२७७] खित्तद्धय विच्छिन्ना अट्ठेव य जोयणाणि बाहल्लं ।
परिहायमाणि चरिमंते मच्छियपत्ताओ तनुययरी ॥
- [२७८] संखंकसन्निकासा नामेण सुदंसणा अमोहा य ।
अज्जुण-सुवण्णयमई उताणय-छत्त-संठाणा ॥
- [२७९] ईसीपब्भाराए सीयाए जोयणंमि लोगंतो ।
तस्सुवरिमम्मि भाए सोलसमे सिद्धमोगाढे ॥
- [२८०] तत्थेते निच्चयणा अवेयणा निम्ममा असंगा य ।
असरीरा जीवघना पएस-निव्वत्त-संठाणा ॥
- [२८१] कहिं पडिहया सिद्धा ?, कहिं सिद्धा पइट्ठिया ? ।
कहिं बोदिं चइत्ताणं, कत्थं गंतूण सिज्झई ? ॥
- [२८२] अलोए पडिहया सिद्धा, लोयसग्गे य पइट्ठिया ।
इहं बोदिं चइत्ताणं, तत्थ गंतूण सिज्झई ॥
- [२८३] जं संठाणं तु इहं भवं चयंतस्स चरमसमयम्मि ।
आसी य पएसघनं तं संठाणं तहिं तस्स ॥
- [२८४] दीहं वा हस्सं वा जं संठाणं हविज्ज चरमभवे ।
ततो तिभागहीना सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥
- [२८५] तिन्नि सया छासट्ठा धनुत्तिभागो य होइ बोद्धव्वो ।
एसा खलु सिद्धाणं उक्कोसोगाहणा भणिया ॥
- [२८६] चत्तारि य रयणीओ रयणि तिभागूणिया य बोद्धव्वा ।
एसा खलु सिद्धाणं मज्झिम ओगाहणा भणिया ॥
- [२८७] इक्का य होइ रयणी अट्ठेव य अंगुलाइं साहीया ।
एसा खलु सिद्धाणं जहन्न ओगाहणा भणिया ॥

- [२८८] ओगाहणाइ सिद्धा भवतिभागेण हुंति परिहीणा ।
संठाणमणित्थंत्थं जरा मरण विप्पमुक्काणं ॥
- [२८९] जत्थ य एगो सिद्धो तत्थ अनंता भवक्खयविमुक्का ।
अन्नोन्नसमोगाढा पुट्ठा सव्वे अलोगंते ॥
- [२९०] असरीरा जीवघना उवउत्ता दंसणे य नाणे य ।
सागारमनागारं लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥
- [२९१] फुसइ अनंते सिद्धे सव्वपएसेहिं नियमसो सिद्धो ।
ते वि असंखिज्जगुणा देस-पएसेहिं जे पुट्ठा ॥
- [२९२] केवलनाणुवउत्ता जाणंती सव्वभावगुण-भावे ।
पासंति सव्वओ खलु केवलदिट्ठीहसंताहिं ॥
- [२९३] नाणंमि दंसणम्मि य इतो एगयरयम्मि उवउत्ता ।
सव्वस्स केवलिस्सा जुगवं दो नत्थि उवओगा ॥
- [२९४] सुरगणसुहं समतं सव्वद्धापिंडियं अनंतगुणं ।
न वि पावइ मुत्तिसुहं नंताहिं वग्गवग्गूहिं ॥
- [२९५] न वि अत्थि माणुसाणं तं सुक्खं न वि य सव्वदेवाणं ।
जं सिद्धाणं सोक्खं अच्चाबाहं उवगयाणं ॥
- [२९६] सिद्धस्स सुहो रासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हविज्जा ।
नंतगुणवग्गुमईओ सव्वागासे न माएज्जा ॥
- [२९७] जह नाम कोइ मिच्छो नयरगुणे बहुविहे वियाणंतो ।
न चएइ परिकहेउं उवमाए तहिं असंतीए ॥
- [२९८] इअ सिद्धाणं सुक्खं अनोवमं नत्थि तस्स ओवम्मं ।
किंचि विसेसेणित्तो सारिक्खमिणं सुणह वुच्छं ॥
- [२९९] जह सव्वकामगुणियं पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई ।
तण्हा-छुहाविमुक्को अच्छिज्ज जहा अमियतित्तो ॥
- [३००] इय सव्वकालतित्ता अउलं निच्चाणमुवगया सिद्धा ।
सासयमच्चाबाहं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥
- [३०१] सिद्ध ति य बुद्ध ति य पारगय ति य परंपरगय ति ।
उम्मक्ककम्मकवया अजरा अमरा असंगा य ॥
- [३०२] निच्छिन्न सव्वदुक्खा जाइ-जरा-मरण-बंधणाविमुक्का ।
सासयमच्चाबाहं अनुहवंति सुहं सया कालं ॥
- [३०३] सुरगणइडिढ समग्गा सव्वद्धापिंडिया अनंतगुणा ।
न वि पावइ जिनइडिढं नंतेहिं वि वग्गवग्गूहिं ॥
- [३०४] भवणवइ वाणमंतर जोइसवासी विमानवासी य ।
सव्विड्डीपरियरिया अरहंते वंदया हुंति ॥

- [३०५] भवणवङ्ग वाणमंतर जोइसवासी विमाणवासी य ।
इसिवालियमयमहिया करिति महिमं जिनवराणं ॥
- [३०६] इसिवालियस्स भद्धं सुरवरथयकारयस्स वीरस्स ।
जेहिं सया थुव्वंता सव्वे इंदा पवरकिती ॥
- [३०७] इसिवालियस्स भद्धं सुरवरथयकारयस्स वीरस्स ।
तेसिं सुराऽसुरगुरु सिद्धा सिद्धिं उवनमंतु ॥
- [३०८] भोमेज्ज-वणयराणं जोइसियाणं विमानवासीणं ।
देवनिकायाण थवो इह समतो अपरिसेसो ॥

मुनि दीपरत्तसागरेण संशोधितः सम्पादितश्च “देविंदत्थओ पङ्णयं सम्मतं”

३२

देविंदत्थओ – नवमं पङ्णयं सम्मतं